भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

24 दिसम्बर 2017

जिनुगू नरसिंह रेड्डी के शर्मनाक गद्दारी और आत्मसमर्पण की निंदा करें!
समझौताहीन संघर्ष और निस्वार्थ त्याग की क्रान्तिकारी परम्परा को उंचा उठायें!
सभी तरह के कीचड़ों का सफाया कर क्रान्ति अपने पथ पर आगे बढ़ेगी!

हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी सदस्य जिनुगू नरसिंह रेड्डी (जम्पन्ना, राजेश) ने उसकी पत्नी नवता (जया)(डिवीजनल कमेटी सदस्य) के साथ 23 दिसम्बर को दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। इससे पहले ही उसने सर्वहारा विचारधारा, माओवादी पार्टी, दीर्घकालीन जनयुद्ध, क्रान्तिकारी आंदोलन और उत्पीड़ित जनता के ताकत पर विश्वास खो दिया था। बदलते वस्तुगत परिस्थिति और दुश्मन के तेज होते चौतरफा हमले से उत्पन्न वर्ग संघर्ष के नये और कठिन दौर का मुकाबला करने में विफल होकर उसने भगोड़े का एक निहायती स्वार्थी, घिनौना और कायराना रास्ता अपनाते हुए दुश्मन के सामने घुटने टेक दिया। भारत के सर्वहारा वर्ग, उसके हिरावल पार्टी, भारतीय क्रान्ति तथा देश के मेहनतकश जनता के साहसिक संघर्ष के साथ यह सरासर विश्वासघात है। यह उन हजारों क्रान्तिकारी शहीदों के बलिदानों के साथ भी विश्वासघात है जिन्होंने उन्हीं वर्ग दुश्मनों के साथ लड़ते हुए अपनी जान न्योछावर की जिनकों आज नरसिंह रेड्डी बेशर्मी से गले लगा रहा है। इसी के साथ क्रान्तिकारी आंदोलन में उसके तीन दशक के राजनीतिक जीवन का भी शर्मनाक अंत हुआ है। हमारी केन्द्रीय कमेटी नरसिंह रेड्डी की गद्दारी और आत्मसमर्पण की कड़ी शब्दों में निंदा करती है। पार्टी के कतारों, पूरी क्रान्तिकारी शिविर, व्यापक संघर्षरत जनता और भारतीय क्रान्ति के सभी मित्रों से हम अपील करते है कि ऐसे गद्दारों और उनके घिनौने आत्मसमर्पण की राह को खारिज करें। नरसिंह रेड्डी के पतन से जरा भी विचलित हुए बिना हमारी केन्द्रीय कमेटी पार्टी की तात्कालिक और अंतिम लक्ष्यों को पूरा करने के लिए वर्ग संघर्ष के लाल परचम को दृढ़ता से आगे बढ़ाने की अपनी प्रतिबद्धता को फिर से दोहराती है।

1980 के दशक के शुरूआती दिनों में नरसिंह रेड्डी हैदराबाद शहर के एक फेक्टरी में टेकनिशियन के रुप में नौकरी करते समय क्रान्तिकारी आन्दोलन में शामिल हुआ था। कुछ समय के बाद वह एक पेशेवर क्रान्तिकारी बन गया और पार्टी ने उसे वरंगल जिला के एटूरुनागारम के जंगली इलाके में एक गुरिल्ला दल सदस्य के रूप में काम करने के लिए भेजा। 1986 और 1995 के बीच वह एक दल कमांडर, एरिया कमेटी सदस्य, जिला कमेटी सदस्य और जिला कमेटी सचिव के रूप में विकसित हुआ। उत्तरी तेलंगाना में आधार इलाका निर्माण के दृष्टिकोण से गुरिल्ला युद्ध को विकसित करने की योजना के तहत 1995 में उत्तर तेलंगाना स्पेशल जोनल कमेटी (एनटीएसजेडसी) का गठन किया गया। उसी साल हुए एनटी स्पेशल जोन की पहली अधिवेशन में उसे इस कमेटी के सदस्य के रूप में चुना गया। 2000 में वह एनटीएसजेडसी का सचिव बना और 2007 तक इसी पद पर कार्यरत रहा। 2001 में वह केंद्रीय कमेटी में चुना गया और 2001 से 2007 के बीच एक केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में उसने उत्तर तेलंगाना में काम किया। 2007 में उसे केन्द्रीय मिलिटरी कमिशन (सीएमसी) में को-ऑप्ट कर लिया गया और इसके बाद उसने उत्तर तेलंगाना सहित मध्य रीजियन के अन्य भागों में भी काम किया। 2011 में उसे ओडिशा तबादला किया गया जहां वह 2016 के अंत तक कार्यरत रहा। पिछले एक साल से वह वैचारिक और राजनीतिक ढुलमुलपन में डुबा हुआ था और आखिरकार नवम्बर 2017 में उसने संबंधित केन्द्रीय कमेटी सदस्यों को अपने आत्मसम्पर्ण करने के निर्णय के बारे में बताया।

यह सच है कि नरसिंह रेड्डी ने तीन दशकों से भी ज्यादा के एक सापेक्षिक रूप से लम्बे समय तक क्रान्तिकारी आंदोलन में भाग लिया, पार्टी की सर्वोच्च नेतृत्वकारी इकाई केन्द्रीय कमेटी के सदस्य बनने लायक राजनीतिक रूप से विकसित हुआ, और इस क्रम में आंदोलन में योगदान भी दिया। लेकिन दूसरी तरफ, अपने पूरे राजनीतिक जीवन में वह व्यक्तिवाद, नौकरशाही और झूठी प्रतिष्ठा जैसी कई गंभीर कमजोरियों, कमियों और गैर-सर्वहारा रूझानों से घिरा रहा। इस पूरे दौर में उसके साथ गुरिल्ला दल और पार्टी कमेटियों में काम करनेवाले कामरेडों तथा नेतृत्वकारी साथियों

ने उसके इन नकारात्मक पहलुओं के खिलाफ लगातार संघर्ष किए। संबंधित कमेटियों ने हर कदम पर उसके गलतियों को सुधारने की कोशिश की और उसने भी इनमें से कई आलोचनाओं को एक न एक तरीके से स्वीकार किया। लेकिन उसकी कमजोरियां, कमियां और सीमितताएं जारी रही। खासकर पिछले कुछ सालों में ये नकारात्मक पहलुएं और भी बढ़ गए और पार्टी व आंदोलन के वर्तमान कठिन परिस्थिति में वे आखिरकार उस पर हावी हो गए। दुश्मन से वह इतना भयभीत हो गया था कि वह पार्टी द्वारा दिए गए कार्यभारों को पूरा करने में विफल हो गया। दुश्मन के संभावित हमलों को कारण बताकर उसने महत्वपूर्ण बैठक में शामिल होने से इंकार कर दिया जबकि उसी तरह के परिस्थिति में काम करनेवाले अन्य कामरेडों को इस तरह का आधारहीन आशंका नहीं था। उच्चतर कमेटियों के कामरेडों के अलावा उसके सुरक्षा में जुटे कामरेडों ने भी उसके अकारण डर और हार मानने की भावना की आलोचना की। वर्तमान चल रहे दुश्मन के गंभीर हमले की परिस्थिति का यह मांग है कि पार्टी के उच्चतम स्तर के नेतृत्वकारी साथी युद्ध के मैदान में मजबूती और दृढ़ विश्वास के साथ खड़ा रहें तथा पार्टी, पीएलजीए और आंदोलन की रक्षा के अभिन्न अंग के रूप में अपने आपको सुरक्षित रखते हुए काम जारी रखे। सैनिक क्षेत्र सहित क्रान्तिकारी गतिविधि के सभी क्षेत्रों पर यह लागू होता है। लेकिन इसके विपरीत, पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के एक सदस्य के रूप में उच्च स्तर की राजनीतिक चेतना, तैयारी, साहस, अनुशासन, निस्वार्थ त्याग, आत्मालोचनात्मक रवैया सहित अन्य नेतृत्वकारी गुणों का परिचय देते हुए पार्टी द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों और कार्यभारों को निभाने में नरसिंह रेड्डी असफल रहा।

नरसिंह रेड्डी की कमजोरियां और सीमितताएं एक गंभीर स्तर तक पहुंच गई थी। इसे देखते हुए हमारी केन्द्रीय कमेटी ने उसके काम की समीक्षा की। केन्द्रीय कमेटी इस निष्कर्ष पर पहुंचा की वह गंभीर रूप से मनोगतवाद का शिकार हो गया है, जिसके चलते वह दुश्मन को ज्यादा आंकलन कर रहा था जबकि क्रान्तिकारी आंदोलन और जनता को कम आंकलन कर रहा था। उसने परिस्थिति को वस्तुगत रूप से देखने की क्षमता खो दिया। पार्टी के नेतृत्वकारी कमेटी के सदस्य के रूप में परिस्थिति का सही आंकलन नहीं कर पा कर उसने गलत सांगठनिक पद्धतियां अपनाया। इसके अलावा उसके मनोगतवादी और व्यक्तिवादी सोच को पार्टी कमेटियों पर थौपने की उसकी पुरानी कमेजोरी भी जारी रही। जनवादी केन्द्रीयता और सर्वहारा अनुशासन को ताक में रखकर व्यक्तिगत समस्याओं पर संकीर्ण रूप से तर्कहीन वाद-विवाद और बहस सामने लाने की उसकी आदत बन गई। कभी कभी संबंधित पार्टी कमेटी के काम में वह गतिरोध पैदा करता था और अन्य कामरेडों द्वारा आलोचना करने पर कुछ बैठकों का बहिष्कार करने का भी ध मकी देता था। उसके संगठनविरोधी आचरण और कामकाज के चलते उसने धीरे-धीरे अपने साथियों का विश्वास खो दिया और अलग-थलग पड़ गया। संबंधित पार्टी कमेटियों के कामरेडों ने एकता-संघर्ष-एकता के बुनियाद पर उसके गलतियों और कमजोरियों को सुधारने में मदत देने के लक्ष्य से कई बार उसके इन गलत रूझानों की आलोचना की। लेकिन वह अपने नकारात्मक पहलुओं की गंभीरता को पहचान करने में विफल रहा, आत्मालोचनात्मक रवैया अपनाने से बचता रहा और मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद की रौशनी में अपने विश्व दृष्टिकोण को बदलने में नाकाम रहा। इसके परिणामस्वरूप न केवल उसकी राजनीतिक पतन हुई बल्कि पार्टी को भी उसने काफी नुकसान पहुंचाया।

इन सभी बातों को नजर में रखकर हमारी केन्द्रीय कमेटी ने इस साल की शुरूआत में नरसिंह रेड्डी को दो साल के लिए केन्द्रीय कमेटी से निलम्बित करने का निर्णय लिया। उससे अपेक्षा थी कि वह अपने गलतियों और कमजोरियों को स्वीकार करेगा और अपने साथियों के मदत से इनसे उबरने की गंभीर प्रयास करेगा। लेकिन न ही उसने इस निर्णय को सकारात्मक ढंग से ग्रहण किया और न ही कोई आत्मालोचना पेश किया। केन्द्रीय कमेटी द्वारा दिए गए राज्य कमेटी सदस्य की जिम्मेदारी लेने से भी उसने मना कर दिया। केन्द्रीय कमेटी द्वारा उसे निलम्बित करने की निर्णय के बाद नरसिंह रेड्डी ने अवसरवादी तरीके से पार्टी लाईन के साथ उसके 'मतभेद' का मुद्दा उठाया। उसने दावा किया कि भारत अब अर्ध-औपनिवेशिक अर्ध-सामंती देश नहीं रह गया है और यह अब एक पूंजीवादी देश में तब्दील हो गयी है। इसलिए उसका कहना था कि इन बदलते परिस्थितियों के मुताबिक हमारी पार्टी की लाईन को बदलकर वर्तमान के देश की परिस्थिति के हिसाब से बगावत की लाईन को अपनाना चाहिए। उसने इन बातों को पार्टी के किसी भी मंच पर नहीं उठाया बल्कि व्यक्तिगत तौर पर कुछ साथियों से चर्चा की। साथियों ने उसे इन मतभेदों को सुलझाने के लिए पार्टी मंचों पर उठाने कि सलाह दी। लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं था और पार्टी से भाग निकला। इससे यह साबित होता है कि उसके तथाकथित राजनीतिक मतभेद उसके वैचारिक-राजनीतिक पतन पर पर्दा डालने के बहाने के अलावा और कुछ नहीं। निम्न पूंजीवादी झूठी-प्रतिष्ठा और स्वार्थी संकीर्णतावाद से ग्रस्त होकर उसने पार्टी के निर्णय को खारिज कर दिया, उसके अंदर मौजूद गैर-सर्वहारा रूझानों के खिलाफ संघर्ष करने से इन्कार कर दिया और अपने आपको एक सच्चे कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी के रूप में ढालने में विफल हो गया। विनम्रता से सिर झुकाकर क्रान्ति और जनता की सेवा करने के बजाय उसने आत्मसमर्पण कर दुश्मन के दया पर पलनेवाले एक गंदे कीड़े का जीवन बिताना ही

बेहतर समझा। इस तरह एक क्रान्तिकारी का एक गद्दार और प्रतिक्रान्तिकारी के रूप में परिवर्तन पूरा हो गया।

हर एक क्रान्ति कई उतार-चढ़ावों, करवटों और कठिन परिस्थितियों से होकर गुजरती है। चुनौतियों का दृढ़ता से सामना करते हुए ही एक सर्वहारा पार्टी अपने आपको मजबूत करती है और क्रान्ति को जीत के मुकाम तक पहुंचाने की क्षमता हासिल करती है। इस तरह की परिस्थितियों में सभी कम्युनिस्टों के लिए - खासकर गैर-सर्वहारा वर्गों से कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होनेवालों के लिए - यह बहुत ही जरूरी हो जाता है कि वे अपने सैद्धांतिक और राजनीतिक समझदारी को गहरी करें, सर्वहारा विश्व दृष्टिकोण को अपनाकर खुद को इसके मुताबिक ढालें तथा इस पर अडिग रहें। इन चुनौतीपूर्ण समयों में उन्हें जनवादी केन्द्रीयता का और भी दृढ़ता से पालन करना चाहिए, पार्टी की लौह अनुशासन के मुताबिक चलना चाहिए, अपने साथियों तथा जनता के साथ और भी नजदीकी से घुलमिल जाना चाहिए, व्यवहार से सीखकर गलतियों को सुधारना चाहिए, निजी स्वार्थ के खिलाफ लड़ना चाहिए, निस्वार्थ रूप से जनता की सेवा करनी चाहिए और आखिरी दम तक एक वचनबद्ध क्रान्तिकारी के रूप में बने रहने की संघर्ष में पहली कतार पर खड़ा रहना चाहिए। लेकिन इस तरह के परीक्षा की घड़ी में विफल होनेवाले लोग भी हमेशा रहते हैं। इतिहास गवाह है कि अपने स्वार्थ और अस्तित्व को ही सबसे ज्यादा महत्व देनेवाले मुठ्ठीभर लोग खुद को बदलने या त्याग के लिए तैयार नहीं होते हैं। ऐसे लोगों का संकटपूर्ण मोढ़ों में अपने आपको आंदोलन से अलग कर लेना बहुत ही आम बात है। वे क्रान्तिकारी शिविर से भाग खड़े होते हैं और कभी-कभी दुश्मन के सेवा में प्रतिक्रान्तिकारी भी बन जाते हैं। नरसिंह रेड्डी इसी तरह के एक क्रान्तिकारी का नकारात्मक उदाहरण पेश करता है। अपने कामरेडों और जनता से एकाकार होने से इन्कार कर, अपने कमजोरियों से संघर्ष करना बंद कर और दुश्मन से आतंकित होकर वे दुश्मन के सामने आत्मसम्पर्ण करते हैं और जनता के लिए अपनी उपयोगिता को खुद अपने ही हाथों से खत्म कर देते हैं। वर्ग संघर्ष के क्रम में क्रान्ति इस तरह के लोगों को समय-समय पर रद्दी के रूप में उठाकर कुड़ेदान में फेंक देती हैं।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं अगर ऐसे कुछ लोग दुश्मन का राग आलापते हुए पार्टी, पार्टी नेतृत्व, क्रान्तिकारी आंदोलन और भारतीय क्रान्ति के भविष्य पर कीचड़ उछालने लगे। दुश्मन द्वारा खड़े किए गए ये लोग पार्टी तथा क्रान्ति को नुकसान पहुंचाने के एकमात्र उद्देश्य से छद्म 'बुद्धिजीवी', 'पत्रकार', 'सामाजिक कार्यकर्ता' आदि के नये अवतार में प्रकट हो सकते हैं। हमारे कामरेडों, मित्रों और भारतीय क्रान्ति के सुभाकांक्षियों को इस तरह के लोगों से सावधान रहना चाहिए और उनका मुहतोड़ जवाब देना चाहिए। उन्हें दुश्मन के दुष्प्रचारतंत्र का एक भाग के रूप में पहचान करते हुए इन गद्दारों के झूठे आरोपों को कुड़ेदान में फेंक देना चाहिए।

ऐसे गद्दारों और पाखंडियों के बिल्कुल विपरीत, हर सर्वहारा क्रान्ति समझौताहीन कम्युनिस्ट योद्धाओं को सामने लाती है जो अपने आखिरी सांस तक जनता की सेवा करते हैं। हजारों वीर शहीदों के निस्वार्थ आत्मत्याग की लम्बी और महान परम्परा का वारिस भारतीय क्रान्ति भी इसका अपवाद नहीं है। इन अमर शहीदों में शामिल है हमारे प्यारे महान नेता कामरेडस चारू मजुमदार और कन्हाई चटर्जी, सरोज दत्त, सुशीतल रायचौधरी, अमुल्य सेन, चंद्रशेखर दास, कृष्णमुर्ति, सत्यम, कैलाशम, अप्पु, वर्गीस, विश्वकर्मा, बालन, दिनकर, श्याम, महेश, मुरली, करम सिंह, परिमल सेन, संदे राजमौली, वडकपुर चंद्रमौली, अनुराधा गांधी, पटेल सुधाकर, चेरूकुरी राजकुमार, मल्लोझोल्ला कोटेश्वरलु, राउफ, सुशील राय, श्रीध र श्रीनिवासन, कुप्पु देवराज, नारायण सन्याल, पद्मा, ललिता, उर्मिला, रजिता, अजिता, साकेत राजन, मैमुद्दीन, आशीष यादव, प्रसाद, दया, प्रभाकर, मंगतू, शहीदा, रामकृष्ण, यादन्ना, माधव, महेंदर, मस्तान राव, पुल्लि अंजन्ना, कंचन, शशधर महतो, जनार्दन, भूमैया-किष्टा गौड और हजारों अन्य शहीद कामरेड्स जो क्रान्ति और जनता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर अंत तक अडिग रहे। वे ही जनता के असली वीर और आदर्श है जो हमें हमेशा सही राह दिखाते हैं।

प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों के हाथों पलनेवाले कुछ गद्दारों और धोकेबाजों का विश्वासघात क्रान्ति को कभी नहीं रोक सकती। ज्यादा से ज्यादा वे कुछ तात्कालिक अवरोध और नुकसान ही पैदा कर सकते हैं। लेकिन इस तरह के परजीवियों को अपने राह से हटाकर क्रान्ति अपनी मुकाम की ओर आगे बढ़ेगी। वीर शहीदों से प्रेरणा लेकर कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों के नेतृत्व में देश की करोड़ों-करोड़ उत्पीड़ित जनता नरसिंह रेड्डी जैसे गद्दारों को उनके आकाओं के साथ इतिहास के कुड़ेदान में फेंकते हुए अपनी अंतिम जीत हासिल करेगी।

Abhay

(अभय)
प्रवक्ता
केन्द्रीय कमेटी
भाकपा (माओवादी)